- **सिंचाई :** अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए मृदा में पर्याप्त नमी बनाये रखना आवश्यक है। सिंचित अवस्था में दो सिंचाई करें। पहली सिंचाई फूल आने से पूर्व तथा दूसरी सिंचाई फलियों के लगने के समय करें।

- **निकाई-गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन :** राई फसल में 15-20 दिनों के अंदर अतिरिक्त पौधों की बछनी जरूर करें। बुआई के 20-25 दिनों बाद निकाई-गुड़ाई करें।

- **कटनी दौनी एवं भंडारण :** जब 75 प्रतिशत फलियाँ सुनहरे रंग की हो जाये तो समझ लेना चाहिये कि फसल कटनी करने के लिये तैयार है। फसल की कटनी करने के बाद इसे सुखा कर अपने संसाधनों द्वारा बीजों को अलग कर लें। देर से कटाई करने पर बीजों के झड़ने की आशंका रहती है। बीजों को 3-4 दिन सुखाकर भंडारित करें।

Printed at Vidya Printers, Patna # 9234849923 E-mail : vidyaprintersjp@gmail.com

श्री नरेन्द्र सिंह
मा० कृषि मंत्री, बिहार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

श्री जीतन राम मांझी
मा० मुख्यमंत्री, बिहार

किसान जागरूकता महाअभियान-सह-रबी महोत्सव 2014

राई की उन्नत खेती

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्टः बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना – 800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

राई की उन्नत खेती

परिचय :

रबी तेलहनी फसलों में राई का विशेष स्थान है। जिन क्षेत्रों में कम वर्षा की स्थिति में धान की खेती नहीं हो सकी, उन खाली खेतों में राई की अगात खेती कर खरीफ फसलों की भरपाई की जा सकती है।

- **भूमि का चुनाव :** राई की खेती सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है।
- **खेत की तैयारी :** खेत की तैयारी हेतु दो-तीन बार जुताई करके पाटा चला दें और खेत समतल कर लें।
- **अनुशंसित प्रभेद :**

उन्नत प्रभेद	बोआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि०/हे०)	तेल की मात्रा
वरुणा	15–25 अक्टूबर	135–140	20–22	42 प्रतिशत
पूसा बोल्ड	15–25 अक्टूबर	120–140	18–20	42 प्रतिशत
क्रांति	15–25 अक्टूबर	125–130	20–22	40 प्रतिशत
राजेन्द्र राई पिछेती	15 नव.–10 दिस.	105–115	12–14	41 प्रतिशत
राजेन्द्र अनुकूल	15 नव.–10 दिस.	105–115	10–13	40 प्रतिशत
राजेन्द्र सुफलाम	15 नव.–25 दिस.	105–115	12–15	40 प्रतिशत

- **बीज दर :** 05 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर।

- **बीजोपचार :** बीज जनित रोगों एवं कीटों से फसल को बचाने के लिये फफूंदनाशक दवा से बीजों को उपचारित करना जरूरी है। बुआई से पहले बीजों को वेबिस्टिन चूर्ण से 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- **बोने की दूरी :** पंक्ति-से-पंक्ति की दूरी 30 सें.मी. तथा पौधे-से-पौधे की दूरी 15 सें.मी.।
- **खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :** 8-10 टन सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद खेत की अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिए। उर्वरकों की असिंचित अवस्था में 40 किलो ग्राम नेत्रजन, 20 किलो ग्राम फास्फोरस एवं 20 पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। उर्वरकों की सिंचित अवस्था में 80 किलो ग्राम नेत्रजन, 40 किलो ग्राम फास्फोरस एवं 40 किलो ग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है।
- **प्रयोग विधि :** कम्पोस्ट खाद को बुआई से 20-30 दिन पूर्व खेत में डालकर अच्छी तरह मिला दें। सिंचित अवस्था में नेत्रजन की आधी मात्रा एवं स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा फूल लगने के समय उपरिवेशन करें। असिंचित अवस्था में नेत्रजन, स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें। जिंक की कमी वाले खेत में प्रति हेक्टेयर 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट खेत की तैयारी के समय डालें।